[illegible]
[illegible] College, [illegible]
Subject – Business Organisation [illegible]

1. संगठन से आप क्या समझते हैं? [illegible] की विशेषता [illegible]

संगठन के सिद्धान्त को लिखें। [illegible] विभागीयकरण के क्या कारण हैं?

Ans:- आज के व्यावसायिक युग में प्रत्येक Business Organisation के विद्यार्थी के लिए यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि संगठन क्या है। क्योंकि व्यवसाय में संगठन का वही महत्व है जो कि मानव शरीर में रक्त का है। इसलिए आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में संगठन को जानना, समझना अत्यन्त आवश्यक है। सामान्य अर्थ में "संगठन" व्यक्तिगत प्रयासों को एकत्रित करने एवं किसी निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में उनका सदुपयोग करने की एक कला है।

वैसे तो संगठन की परिभाषा अनेक विद्वानों ने दी है। लेकिन उर्विक और जी॰ ई॰ मिलवर्ड की परिभाषा मुख्य है। उर्विक ने संगठन की परिभाषा देते हुए कहा है कि, "किसी कार्य को सम्पादित करने के लिए किन किन क्रियाओं को किया जाए इसका निर्धारण करना एवं उन क्रियाओं का व्यक्तियों के बीच वितरण की व्यवस्था करना ही संगठन है।"

इस परिभाषा का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि किसी भी कार्य को अनेक भागों में बाँटना और उन भागों का बँटवारा संगठन में कार्यरत व्यक्तियों के बीच करना ही संगठन है। लेकिन यह नहीं कहा गया है कि कार्य का बँटवारा इस प्रकार करना चाहिए जिससे कि उपयुक्त व्यक्ति को उपयुक्त कार्य मिले जो कि संगठन की सफलता के लिए आवश्यक है।

जी॰ ई॰ मिलवर्ड ने "संगठन" की परिभाषा देते हुए कहा है कि "संगठन से तात्पर्य उन साधनों से है जो कि सम्पूर्ण कार्य को समुचित भागों में बाँटता है विभिन्न भागों को एक पद के अन्तर्गत समूहबद्ध करता है और प्रत्येक कार्य समूह के लिए उपयुक्त व्यक्तियों को नियुक्त करता है तथा योजनानुसार कार्य किया जा रहा है या नहीं इसकी देखभाल के लिए योग्य व्यक्तियों को नियुक्त करता है।"

Ajanta Milky

Scanned with CamScanner

यह परिभाषा एक Standard परिभाषा कही जा सकती है। क्यों कि इन्होंने अपनी परिभाषा में इस बात पर जोर दिया है कि कार्य योजनानुसार हो तथा सही उचित व्यक्ति को ही उचित कार्य मिले।

इस प्रकार हम कहते हैं कि उपक्रम के विभिन्न साधन भूमि, श्रम, पूंजी व साहस के बीच उचित सम्बन्ध बनाना एवं उनमें सहयोग की भावना स्थापित करना ही संगठन है।

Principles or Characteristics of a sound organization :- प्रत्येक संगठन को उन सभी तत्वों या सिद्धांतों का पालन किया जाता है जो किसी निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होती है। इस प्रकार संगठन के निम्न मुख्य सिद्धान्त हैं —

1. उद्देश्य का सिद्धान्त
2. विशिष्टीकरण का सिद्धान्त
3. समन्वय का सिद्धान्त
4. अधिकार का सिद्धान्त
5. उत्तरदायित्व का सिद्धान्त
6. सन्तुलन का सिद्धान्त
7. नियन्त्रण का सिद्धान्त
8. आदेश की एकता का सिद्धान्त
9. लोचकता का सिद्धान्त
10. व्याख्या का सिद्धान्त आदि।

उद्देश्य का सिद्धान्त :- प्रत्येक संगठन तथा संगठन के प्रत्येक विभाग का वही मूलभूत सिद्धान्त होना चाहिए जो समस्त संस्था का है।

विशिष्टीकरण का सिद्धान्त :- इस सिद्धान्त के अनुसार संगठन के प्रत्येक व्यक्ति को वही कार्य देना चाहिए जिस कार्य में वह व्यक्ति निपुण हो। यदि सम्भव हो तो उस कार्य को कई उपभागों में बाँटकर विभिन्न व्यक्तियों को सौंपना चाहिए। इससे कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न होता है।

समन्वय का सिद्धान्त :- संगठन का मूलभूत उद्देश्य किसी कार्यालय या व्यावसायिक इकाई के विभिन्न कार्यों, साधनों तथा व्यक्तियों के क्रियाओं में समन्वय

स्थापित करना है।

अधिकार का सिद्धान्त :- प्रत्येक संगठन की व्यावसायिक इकाई में निश्चित किसी पास उसका अधिकार रहता है। इसलिए संगठन में अधिकारी को चाहिए कि अपने अधिनस्थ अधिकारी [illegible] कर्मचारियों को कुशलतापूर्वक संगठन में अधिकार को सौंपकर कार्य सम्पादित करवाना। सामान्यतः किसी भी सत्ता को तब तक [illegible] नहीं होना चाहिए। अन्यथा [illegible] के [illegible]

उत्तरदायित्व का सिद्धान्त :- [illegible] उत्तरदायित्व के निरूपण [illegible] सम्भव है। वास्तव में अधिकार और दायित्व एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। फिर भी प्रत्येक कर्मचारी को यह स्पष्ट रूप से मालूम हो जाना चाहिए कि वह अपने कार्य के सम्बन्ध में किन लोगों के प्रति उत्तरदायी है और उसका उत्तरदायित्व किस सीमा तक है।

नियन्त्रण का सिद्धान्त :- प्रत्येक उच्च अधिकारी की शारीरिक मानसिक एवं बौद्धिक क्षमता सीमित होती है अतः अनुकूलतम से अधिक भार पड़ने पर संगठन कुप्रभावित हो सकता है। अतः उसका नियन्त्रण क्षेत्र सीमित होना चाहिए। एक अच्छे संगठन के लिए आवश्यक है कि आपसी नियन्त्रण छोटा हो।

संतुलन का सिद्धान्त :- संगठन का उद्देश्य किसी औद्योगिक एवं व्यावसायिक इकाई के विभिन्न कार्यों, साधनों तथा कर्मचारियों के क्रियाओं में संतुलन स्थापित करना है।

आदेश की एकता का सिद्धान्त :- कार्य का विभाजन करते समय यह देखना चाहिए कि एक कर्मचारी को केवल एक ही अधिकारी से आदेश प्राप्त होते हों अन्यथा संगठन शिथिल पड़ सकता है।

लोचकता का सिद्धान्त :- एक अच्छे संगठन के लिए आवश्यक है कि वह लचीला एवं सरल होना चाहिए ताकि जरूरत के अनुसार उसमें उतार-चढ़ाव हो सके।

व्याख्यात्मकता का सिद्धान्त :- प्रत्येक कर्मचारी का क्या अधिकार है, क्या कर्तव्य है साथ ही उनके दायित्व क्या हैं आदि बातों की व्याख्या लिखित रूप से होना आवश्यक है। ऐसा होने से प्रत्येक कर्मचारी अपना अधिकार और दायित्व को ध्यान में रखकर काम करेंगे

Scanned with CamScanner

जिसके कार्य अधिक सुचारु रूप से सम्पन्न हो सकता है।

इस प्रकार एक अच्छे संगठन के लिए अनेक बातों का होना आवश्यक है तब ही वह सफलता की ओर अग्रसर हो सकता है।

Sunil Kumar
28/4/2020

Scanned with CamScanner